खण्ड-10, अंक-1, वर्ष-2022, मु0प्र0 21-22
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v10i1.4
SJIF (2021) : 7.247

शोध पत्र

A Study on the Distribution of Smooth-Coated Otter

Satish Kumar Sharma
Rajasthan Forest Service (Retd.)
14-15, Chakri Amba, Saket Nagar, Rampura Chouraha
Jhadol Road, Post - Nai, Udaipur-313 004, Rajasthan, India

Received: 30-07-2022, Accepted: 10-09-2022

Abstract- Smooth-coated otter was once distributed in a big part of the Rajasthan State. This situation lasted upto 1955-65. After this period, animal killing was started for its pelt to make the country shoes (*Jutis*). This destructive practice lasted till the commencement of Wildlife (Protection) Act, 1972. But it was too late and species became exterminated in a big part of the State. Habitat loss and anthropoginic disturbances also took heavy toll form the speices. Now it is mainly confined to Chambal river system. Efforts should be done to introduce the species in big water bodies like Jakham, Bisalpur and Mahi dams. Once successful, such efforts should be started in newer areas within its distribution range.

Key words- Smooth-coated Otter, Species distribution, Rajasthan

राजस्थान में ऊदबिलाव वितरण–एक अध्ययन

सतीश कुमार शर्मा
राजस्थान वन सेवा (सेवानिवृत्त)
14–15, चकरी आम्बा, साकेत नगर, रामपुरा चौराहा,
झाड़ोल रोड, पोस्ट – नाई, उदयपुर–313 004, राजस्थान, भारत
sksharma56@gmail.com

सार– एक समय था जब नर्म फर वाले ऊदबिलाव राजस्थान के बड़े भू–भाग में पाया जाता था। यह स्थिति 1955–65 तक बनी रही, लेकिन इस के बाद इस प्राणी की खाल प्राप्त करने हेतु इसे मारा जाने लगा, क्योंकि खाल से जूतियाँ बनाने का चलन निकल पड़ा। वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 आने तक यह विनाशकारी कार्य चलता रहा। लेकिन अब तक काफी देर हो चुकी थी तथा राज्य के बड़े क्षेत्र से यह प्रजाति विलुप्त हो गई। आवास विनाश एवं मानवीय व्यवधान ने भी इस प्रजाति को बहुत हानि पहुंचायी है। अब यह प्रजाति मुख्य रूप से चम्बल नदी प्रवाह तंत्र में ही बची है। इस प्रजाति को जाखम, बीसलपुर एवं माही जैसे बड़े बांधों में पुनः आबाद करने के प्रयास किये जाने चाहिये। सफलता मिलने पर, ये प्रयास प्रजाति के वितरण क्षेत्र में नये स्थानों पर भी प्रारम्भ किये जाने चाहिए।

बीज शब्द– ऊदबिलाव, प्रजाति वितरण, राजस्थान

1.**परिचय**– राजस्थान में नर्म फर वाला ऊदबिलाव (Lutrogale *perspicillata* Geoffroy) वन्य अवस्था में प्राकृतिक आवासों में पाया जाता है। राजस्थान में इसे जल मानषा, जल मानुष, जल मानसिया, लुद्रा, ऊद, झल्ला, जल्ला, वाणिया, रूद आदि स्थानीय नामों से जाना व पहचाना जाता है। यह मीठे पानी के जलीय आवास का एक मांसाहारी प्राणी है, जो मछलियों का शिकार करने व खाने का शौकीन होता है, लेकिन सूखे की स्थिति में यह जंगल में थलीय आवास में भी रह कर भूमि पर शिकार कर अपना गुजारा कर लेता है। भूमि पर दरारों व गुफाओं में रह कर यह सूखे के समय को काट लेता है (Prater, 1980)। आई.यू.सी.एन. की सूची में इसे खतरों के प्रति संवेदनशील (Vulnerable) प्रजाति माना गया है (Saha & Mazumdar, 2008)। राजस्थान में नर्म फर वाले ऊदबिलावों के अनेक पहलुओं, खासकर वितरण पर कुछ कार्य हुआ है। अभी तक के अध्ययनों में अधिक जोर चम्बल नदी क्षेत्र में रहा है जो इस प्रजाति का राजस्थान में मुख्य आवास व वितरण क्षेत्र है (Hussain, 1996; Hussain & Choudhury, 1997; Sharma et al. 2013; Verma, 2008; Johnsing & Manjrekar, 2013; व्यास, 2016)। राजस्थान के थार क्षेत्र में कुछ भागों में भी प्रजाति का वितरण रहा है (Prakash, 1975 & 1994; Alfred & Agrawal, 1996)। दक्षिण राजस्थान में भी यह प्रजाति वितरण में रही है (तंवर, 1956; Sharma, 2007)।

भारत में नर्म फर वाले ऊदबिलाव की दो उपजातियाँ *Lutrogole perspicillata perspicillata* एवं *L. perspicillata sindica* ज्ञात

हैं (Prater, 1980)। प्रख्यात प्राणी वैज्ञानिक डॉ0 ईश्वर प्रकाश के अनुसार उप प्रजाति *L.p. sindica* पाली जिले में जवाई बांध एवं जयपुर जिले में जमवा रामगढ़ बांध में पहले पाई जाती थी (Prakash, 1975 एवं 1994)। मेनन ने अपनी पुस्तक ''इंडियन मैमल्स'' में उपप्रजाति *L.p. perspicillata* का वितरण पूरे राजस्थान में बताया है (Menon, 2014)।

2. **अध्ययन के उद्देश्य**– उपलब्ध सन्दर्भ साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि नर्म फर वाले ऊदबिलाव के वितरण सम्बन्धी अधिकांश अध्ययन चम्बल नदी क्षेत्र में हुआ है (Hussain, 1996; Hussain & Choudhury, 1997; Sharma et al. 2013; Verma, 2008; Johnsing & Manjrekar, 2013; व्यास, 2016)। अन्य क्षेत्रों में इस प्रजाति के वितरण की स्पष्ट तस्वीर उपलब्ध नहीं है। इस प्रजाति के पूरे राजस्थान में वितरण की वर्तमान स्थिति को जानने हेतु ही प्रस्तुत अध्ययन किया गया।

3. **प्रयोगात्मक अध्ययन विधि**– लेखक राजस्थान वन विभाग में वर्ष 1980 से 2016 तक कार्यरत रहा। इन वर्षों में राज्य के विभिन्न जिलों के ऊदबिलाव हेतु उपयुक्त अनेकानेक आवासों को बहुत नजदीक से देखने के अवसर मिले एवं 2016 से 2021 तक भी सर्वे कार्य जारी रखा। इस दौरान वनकर्मियों, पुराने शिकारियों, ठिकानेदारों, पुराने दरबारियों आदि से मिलने के अवसर भी मिले। मछली ठेकेदारों से भी सम्पर्क किया गया। ये सब सूचनाओं के अच्छे स्रोत रहे। उपलब्ध साहित्य का भी अध्ययन किया गया। जहाँ पहले ऊदबिलाव होने की सूचना थी, उन स्थानों पर पुनः–पुनः जाकर सूक्ष्म निरीक्षण किया गया तथा उनके होने या न होने की पुख्ता जानकारी प्राप्त की गई। चम्बल नदी में स्थानीय वनकर्मियों की मदद से अधिक संभावना वाले क्षेत्रों में पैदल, जीप, मोटरसाइकिल या नाव से सर्वे किया गया। नाव से सर्वे के दौरान सभी सुरक्षा उपाय काम में लिये गये। मानसी नदी में पैदल गोराणा गाँव से बीरोठी गाँव तक जहाँ यह नदी वाकल नदी में मिल जाती है, पैदल 1992 से 1998 तक कई बार सर्वे किया गया। वाकल नदी में बीरोठी से पाथरपाड़ी गाँव से आगे जहाँ यह नदी गुजरात राज्य में प्रवेश करती है, पैदल 2001 से 2004 तक कई बार पूरी नदी में तो कई बार खण्ड लम्बाई में सर्वे किया गया। बनास नदी का भी कुम्भलगढ़–जरगा क्षेत्र से प्रारम्भ कर नाथद्वारा तक पैदल व मोटर साइकिल से सर्वे किया गया। बाणगंगा, साहबी, जवाई व लूणी नदी में भी जगह–जगह पैदल सर्वे किया। नदी सर्वे दिसम्बर से जून के मध्य किये गये, क्योंकि इस समय नदियों के किनारे पैदल चलना तथा एक किनारे से दूसरे किनारे प्रेक्षण हेतु आना–जाना अपेक्षाकृत सहज था। जहाँ–जहाँ जलाशयों में मगरथे, वहाँ सुरक्षा का पर्याप्त ध्यान रखा गया। राजस्थान के रेगिस्तान में इन्दिरा गांधी नहर के कमाण्ड क्षेत्र एवं इसके आने से बने नये जल भराव क्षेत्रों में भी 1997 से 2001 तक व्यापक सर्वे किया गया।

4. **वितरण सम्बन्धी प्रेक्षण**– सर्वे कार्य के दौरान नर्म फर के ऊदबिलावों के वितरण सम्बन्धी मिली सूचनाओं को सारिणी–1 एवं सारिणी–2 में प्रस्तुत किया गया है।

सारिणी–1

राजस्थान में नर्म फर वाले ऊदबिलाव का विवरण क्षेत्र जहाँ प्रजाति पहले विद्यमान थी लेकिन अब उपस्थिति या तो दर्ज नहीं हो रही है या वहाँ अत्यन्त कम संख्या में प्राणी बचे हैं।

क्र.सं.	जिला	उपस्थिति विवरण
1.	राजसमन्द	बनास नदी व राजसमन्द झील में 1950–60 तक आम थे (डॉ0 रजा तहसीन, निजी वार्तालाप, 2016)
2.	पाली	(i) जवाई बांध (Prakash, 1994) (ii) सादड़ी बांध में वर्ष 2000 में 2 ऊदबिलाव देखे गये (श्री पर्बत सिंह चम्पावत, पूर्व क्षेत्रीय वन अधिकारी, सादड़ी, निजी वार्तालाप 2021)
3	जयपुर	जमवा रामगढ़ (Prakash, 1994)
4.	उदयपुर	**(अ) कोटड़ा–झाड़ोल तहसील :** वाकल नदी, मानसी नदी, मामेर तालाब, गांधी सरणा गांव में 1950–55 तक विद्यमान थे (Sharma, 2007) (ब) पिछोला झील, उदयपुर शहर (तंवर, 1956) (स) फतहसागर व पिछोला झील में 1950–60 तक थे (डॉ0 रजा तहसीन, निजी वार्तालाप, 2016) (द) उदयसागर में 1980 में 1 प्राणी देखा (श्री देवेन्द्र मिस्त्री, निजी वार्तालाप, 2021) (ल) कुम्भलगढ़ अभयारण्य (श्री जे0 एस0 नाथवत, पूर्व उप वन संरक्षक, निजी वार्तालाप 1998)

5	डूंगरपुर	(i) गैप सागर में सन् 2000–2010 तक कभी–कभी 1–2 प्राणी नजर आये (श्री महीपाल सिंह, महारावल, डूंगरपुर, निजी वार्तालाप, 2022) (ii) सूरी नदी में 1970–75 के बीच प्राणि विद्यमान थे (श्री वीरेन्द्र सिंह बेडसा, निजी वार्तालाप, 2021)
6.	बांसवाड़ा	(i) केलामेला गांव में नदी में वर्ष 2000 में ऊदबिलाव देखे गये (श्री दिनेश भट्ट, पूर्व सहायक वन संरक्षक, निजी वार्तालाप, 2021) (ii) पांचवदा–पादेड़ी गांव के तालाब में 2–3 प्राणी 2006 से 2007 तक नजर आते थे। (श्री बहादुर सिंह राठौड़, पूर्व क्षेत्रीय वन अधिकारी, निजी वार्तालाप)। (iii) घाटोल क्षेत्र एवं आनन्द सागर (बाई तालाब) में सन् 2000 में प्राणि देखे तथा माही नदी में अब भी कहीं–कहीं इक्के–दुक्के नजर आते हैं (श्री जगमाल सिंह, महारावल बांसवाड़ा, निजी वार्तालाप, 2022)
7.	भीलवाड़ा	ज्ञानगढ़ के तालाब में 1950–60 तक थे (श्री भैरूसिंह चुण्डावत, पूर्व मानद वन्यजीव प्रतिपालक, निजी वार्तालाप, 2016)
8.	जालौर	जवाई नदी के पाट में पानी के गड्ढों में जालौर के आसपास के क्षेत्रों में 1962 में ऊदबिलाव थे (श्री वी0 डी0 शर्मा, पूर्व मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, राजस्थान, जयपुर, निजी वार्तालाप 2021)
9	भरतपुर	वर्ष 1990 तक केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में ऊदबिलाव देखे गए। सीताराम बाबा की डिग्गी व केवलादेव की डिग्गी के पास उनका अच्छा जमावड़ा रहता था। यहाँ उनकी मांदें भी देखने को मिलती थी। तत्समय पांचना बांध से आने वाले पानी में बहुत मछलियां भी आती थी, जो ऊदबिलाव के लिये सहज भोजन के रूप में उपलब्ध होती रहती थी। उस समय जब भरतपुर शहर की केनाल में पानी भरा जाता था तो कई बार ऊदबिलाव शहर की केनाल में भी पहुँच जाते थे। भरतपुर जिले के पोखरों में भी 1990–95 तक जगह जगह ऊदबिलाव देखने को मिल जाते थे। वर्ष 1998 के बाद राष्ट्रीय उद्यान में ऊदबिलाव नजर नहीं आ रहे हैं। जिले में भी अन्य जगह ये प्राणी अब नजर नहीं आते। (श्री भोलू अबरार खान, पूर्व क्षेत्रीय वन अधिकारी, केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर, निजी वार्तालाप, 2021)।
10	अलवर	अजबगढ़ के पास सरसा नदी में तथा सरिस्का बाघ परियोजना क्षेत्र में बान्दीपुल नाले में 1980–85 के बीच कुछ ऊदबिलाव थे। सीलीसेढ़ झील में भी उस समय ऊदबिलाव थे (श्री एल0 पी0 शर्मा, पूर्व उप वन संरक्षक, बाघ परियोजना सरिस्का, निजी वार्तालाप 2021)
11	दौसा	रेडिया बन्धा एवं सैंथल सागर में 1980–85 के मध्य थे (श्री एल0 पी0 शर्मा, पूर्व उप वन संरक्षक, दौसा, निजी वार्तालाप, 2021)
12	प्रतापगढ़	जाखम बांध से सटे पीपली गांव की तरफ 2003 में 1 प्राणी देखा गया। (श्री देवेन्द्र मिस्त्री, निजी वार्तालाप, 2021)
13	टोंक	बनास नदी में 1950–60 तक नदी पाट में पानी के दरों (Pools) में जहाँ मछलियों की उपलब्धता अच्छी थी वहाँ कुछ संख्या में ऊदबिलाव नजर आते थे (डॉ0 रजा तहसीन, निजी वार्तालाप, 2016)।
14	अजमेर	टॉडगढ़–रावली अभयारण्य में जस्सोखेड़ा व बगड़ी के मध्य कुछ जलाशयों में वर्ष 2000 तक कभी–कभी ऊदबिलाव नजर आते थे परन्तु अब नजर नहीं आ रहे (श्री प्रताप सिंह चुण्डावत, पूर्व उप वन संरक्षक, निजी वार्तालाप 2021)

सारिणी–2

राजस्थान में नर्म फर वाले ऊदबिलाव का विवरण क्षेत्र जहाँ प्रजाति अभी भी विद्यमान है

क्र.सं.	जिला	उपस्थिति विवरण
1.	सवाईमाधोपुर	(i) अगस्त 2019 में 1 नर, 1 मादा व 2 बच्चे, कुल 4 प्राणी रणथम्भौर बाघ परियोजना के जोन 3 में देखे गये। पूर्व में धुन्दरमल दर्रा में भी स्थानीय लोगों द्वारा देखे गये (श्री मुकेश सैनी, उप वन संरक्षक एवं डॉ0 धर्मेन्द्र खाण्डल, निजी वार्तालाप, 2021) (ii) बनास नदी में चाणक्य दह में 1987 में 2 प्राणी देखे। ये रणथम्भौर के मिश्रदरा में भी 2014 में देखे गये (श्री यादवेन्द्र सिंह,निजी वार्तालाप, 2018) (iii) पालीघाट के आसपास (चम्बल नदी) में विद्यमान (श्री एम0 एल0 मीणा, मुख्य वन संरक्षक, निजी वार्तालाप, 2008) (iv) पालीघाट के अपस्ट्रीम में चांकली नदी के चम्बल से मिलने के संगम पर 2–4 प्राणी नजर आते हैं। सेवती, खिरकडी, कालाकाच गाँवों के पास चम्बल किनारे ऊदबिलाव विद्यमान हैं (श्री सांवरमल जाट, वन रक्षक, राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य, पालीघाट, निजी वार्तालाप, 2021)
2.	चित्तौड़गढ़	(i) कालाखेत पम्प हाउस के पास भैंसरोड़गढ़ अभयारण्य में 3–4 प्राणी कई बार नजर आते हैं (ii) राणा प्रताप सागर डैम के बैक वाटर में 7–8 की छोटी संख्या दिसम्बर 2021 में देखी गई (iii) राणा प्रताप सागर डैम के डाउन स्ट्रीम क्षेत्र में 5–6 प्राणी दिसम्बर 2021 में देखे गये (iv) राणा प्रताप सागर डैम में स्थित गोराद्वीप पर कुछ गायें अर्द्धजंगली अवस्था में रहती हैं। इस द्वीप पर दिसम्बर 2021 से जनवरी 2022 तक कई जगह ऊदबिलाव का मल देखा गया, हालांकि प्राणी प्रत्यक्ष नजर नहीं आये (v) जावदा कस्बे के पास गुंजाली नदी चम्बल में मिलती है। यहां संगम स्थल पर भी 5–6 प्राणी दिसम्बर 2021 में देखे गये (vi) चूलिया जल प्रपात जो कि रावतभाटा में चम्बल नदी में है, वहाँ जनवरी 27, 2019 में एक मछुआरे पर एक मादा ऊदबिलाव ने हमला कर उसे घायल कर दिया। मछुआरा गलती से मादा की मांद तक पहुँच गया, जिसमें उसके बच्चे थे (श्री अनुराग भटनागर, सहायक वन संरक्षक एवं प्रेम कुंवर शक्तावत, सहायक वनपाल, भैसरोड़गढ़ अभयाराण्य, निजी वार्तालाप, 2022) (vii) ब्राह्मणी नदी में बेगू के पास जुलाई 2022 में कुछ ऊदबिलाव देखे गये (श्री राजू सोनी, निजी वार्तालाप 2022)
3.	करोली	चम्बल नदी में मंडरायल क्षेत्र में राऊ घाट में भी प्राणी नजर आते हैं (श्री अनिल यादव, उप वन सरंक्षण, चम्बल घडियाल अभयारण्य, 2022)।
4.	कोटा	(i) जवाहर सागर डैम में जावरा गाँव के पास 3–5 प्राणियों की संख्या अक्टूबर 2021 में देखी गई। (ii) कोटा शहर में चम्बल में मुक्तिधाम के पास 10–12 प्राणी जनवरी 2022 में नजर आये थे (श्री अनिल यादव, उप वन संरक्षक, राष्ट्रीय घड़ियाल अभयारण्य, सवाई माधोपुर, निजी वार्तालाप, 2022)
5.	धौलपुर	चम्बल नदी (श्री अनिल यादव, उप वन संरक्षक, चम्बल घड़ियाल अभयारण्य, निजी वार्तालाप, 2022)।
6	बूंदी	जवाहर सागर अभयारण्य से आगे चंबल नदी का डाउन स्ट्रीम क्षेत्र (श्री रविन्द्र सिंह तोमर, पूर्व मानद वन्यजीव प्रतिपालक, कोटा; निजी वार्तालाप 2021)

5. **दक्षिणी राजस्थान में वितरण–सारिणी–1** व **सारिणी–2** नर्म फर के ऊदबिलाव की राजस्थान में वर्तमान स्थिति की परिचायक हैं। दक्षिणी राजस्थान में उदयपुर संभाग में ऊदबिलावों की उपस्थिति पिछोला में सन् 1930 में दर्ज की गई थी (तंवर 1956)। उदयपुर शहर व जिले के जलाशयों में ऊदबिलाव 1970–75 तक उपस्थित थे। ऊदबिलाव मछलियां खाने का शौकीन है, अतः यह प्रजाति मछली बहुत बड़े जलाशयों व नदियों में पाया जाता था। 1970–75 तक गाँवों के जलाशयों में जगह–जगह सालभर साफ पानी रहता था, जिनमें मछलियां भी मिलती थी, इसलिये वहाँ इस प्राणी के रहने लायक स्थिति अपेक्षाकृत ज्यादा अच्छी थी। यह माही, मानसी, वाकल एवं बनास नदियों में उपस्थित था तथा पिछोला, फतहसागर, राजसमन्द, जाखम, उदयसागर, ज्ञानगढ़ तालाब, मामेर तालाब एवं माही बांध में भी उपस्थिति दर्ज थी। डूंगरपुर की सूरी नदी में भी ऊदबिलाव थे। यह नदी आगे जाकर सोम नदी में मिलती है। सोम एक बड़ी नदी है एवं इसमें उपयुक्त आवास की निरन्तरता भी है, अतः सोम नदी में भी ऊदबिलाव का बसेरा था (डॉ0 रजा तहसीन, निजी वार्तालाप 2016)। वाकल नदी में शीतलामाता दरा में 1952–54 तक तथा हूरमा दरा में 1970–75 तक ऊदबिलाव देखे गये हैं। वाकल नदी बीरोठी गांव के पास से फुलवारी अभयारण्य की पूर्वी सीमा के पास बहती है लेकिन पानरवा गांव के पास यह पश्चिम दिशा में घूम जाती है व अभयारण्य में प्रवेश कर जाती है। तत्पश्चात् यह पाथरपाड़ी गाँव से कुछ आगे जाकर गुजरात राज्य में प्रवेश कर जाती है। बीरोठी से पाथरपाड़ी तक वाकल नदी के पाट में गर्मी में भी 36 जगह पानी भरा रहता है। इन जलस्रोतों को स्थानीय भाषा में 'दरा' कहा जाता है। 1950 तक इनमें अधिकांश दरों में ऊदबिलावों की अच्छी संख्या निवास करती थी। स्थानीय भाषा में ऊदबिलाव का एक नाम 'वाणिया' भी है। पाथरपाड़ी वन चौकी से कुछ दूर एक दरे का नाम ही 'वाणिया दरा' है, जिसमें कभी ऊदबिलाव रहते थे (श्री बाबूलाल गमेती, स्थानीय निवासी, निजी वार्तालाप, 2016)।

मानसी नदी के किनारे झाड़ोल गाँव के उत्तरी छोर पर एक छोटी पहाड़ी पर सार्वजनिक निर्माण विभाग का एक विश्राम गृह स्थित है। इस पहाड़ी की तलहटी में एक बारहमासी दरा है, जिसमें 1950–60 तक अच्छी संख्या में ऊदबिलाव रहते थे (श्री गुणवंत सिंह झाला, तत्कालीन ठिकानेदार, निजी वर्तालाप, 1998)। लेखक ने इसे 1986 से 2021 तक निरन्तर देखा। परन्तु इसमें कभी ऊदबिलाव नहीं दिखे। यहाँ तक कि वर्ष 2000 के बाद तो इसमें गर्मी में पानी पूर्णतया सूखने लग गया। दक्षिणी राजस्थान की नदियों में व जलाशयों में कई वर्षों से ऊदबिलाव होने के कोई संकेत नहीं मिल रहे हैं। यह प्रजाति कुम्भलगढ़ अभयारण्य व आसपास के जलाशयों में भी 1980–90 तक विद्यमान थी (श्री जे0 एस0 नाथावत, पूर्व उप वन संरक्षक, निजी वार्तालाप, 1998) लेकिन अब वहाँ नहीं है।

6. **पश्चिमी राजस्थान में वितरण**– पश्चिमी राजस्थान में यह प्रजाति पाली जिले के जवाई बांध व जालोर शहर के आस–पास जवाई नदी के पोखरों में वर्ष 2000 से पूर्व भी रही है। अब यह नदी गर्मी में लगभग पूरी सूख जाती है। घाणेराव एवं सादड़ी क्षेत्र में अनेक छोटे–बड़े बांध हैं। इनमें सादड़ी बांध जो राणकपुर जैन मंदिर के पास है, में वर्ष 2000 तक ऊदबिलाव थे, लेकिन अब यहां ऊदबिलाव नहीं बचे। अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में थार रेगिस्तान में गंग नहर एवं इन्दिरा गांधी नहर के सिंचित क्षेत्र विद्यमान हैं। पंजाब की तरफ से आ रहे पानी में ऊदबिलाव बह कर आने की संभावना तो रहती है लेकिन यहां अभी तक ऊदबिलाव नजर नहीं आते हैं।

7. **मध्य, उत्तर–पूर्वी व पूर्वी राजस्थान में वितरण**– डॉ0 ईश्वर प्रकाश (1994) बताते हैं कि जिस समय जवाई एवं जमवारामगढ़ में ऊदबिलाव थे, उन दिनों अजमेर की पुष्कर झील में उन्होंने ऊदबिलाव नहीं देखे। जयपुर, दौसा, अलवर एवं भरतपुर में वर्ष 2000 से पूर्व ऊदबिलाव विद्यमान थे। भरतपुर में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में ऊदबिलावों की एक समय तक अच्छी संख्या रही है। यहाँ सीताराम बाबा की डिग्गी एवं केवलादेव की डिग्गी में न केवल उनकी अच्छी तादाद होती थी अपितु उनकी मांदें भी देखने को मिलती थी तथा वे वहाँ नियमित प्रजनन भी करते थे। उस समय पाँचना बांध से जो पानी आता था उसमें अच्छी संख्या में मछलियां भी बहकर आती थी, जो ऊदबिलावों के पर्याप्त भोजन आपूर्ति करती थी। एक समय ऊदबिलावों की भरतपुर जिले में ऐसी स्थिति भी थी कि गाँवों के बांधों व तालाबों तक में वे नजर आते थे। पुराने भरतपुर शहर की नहर में पानी भरने के दौरान ऊदबिलाव नहर में भी पहुँच जाते थे। उस समय केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के भीतरी भागों में पानी से घिरे टापुओं पर ऊदबिलाव परिवार नजर आना आम बात थी। यहाँ के कुछ ऊदबिलाव जयपुर चिड़ियाघर में भी प्रदर्शन हेतु भिजवाये गये थे। वर्ष 1990 तक केवलादेव में उदबिलाव नजर आते रहे हैं। लेकिन 1998 के बाद यह प्रजाति वहाँ नजर नहीं आ रही है (श्री भोलू अबरार खान, पूर्व क्षेत्रीय वन अधिकारी, केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर, निजी वार्तालाप 2021)।

अलवर जिले में सरिस्का बाघ परियोजना के अन्दर व आस–पास भाग में भी ऊदबिलावों की उपस्थिति 1980–85 तक रही है। अजबगढ़ के पास सरसा नदी में यह प्रजाति रही है। बान्दीपुल वनक्षेत्र में लकड़ी तख्तों के बीच मिट्टी भर कर वन्यजीवों के पीने हेतु जलसंग्रह किया जाता था। इस तरह संग्रह किये पानी में भी ऊदबिलाव पहुंच जाते थे (श्री एल0 पी0 शर्मा, पूर्व सहायक वन संरक्षक, बांध परियोजना सरिस्का, निजी वार्तालाप, 2021)।

अलवर में रूपारेल नदी में भी ऊदबिलावों हेतु उपयुक्त स्थितियां थी। ग्रामीणों का कहना है कि पहले वे इस नदी में भी उपस्थित थे (श्री उदयराम जाट, पूर्व सहायक वन सरंक्षक, निजी वार्तालाप, 2021)। दौसा के रेडिया बंधा व सैंथल सागर में ऊदबिलाव रहे हैं। सैंथल सागर 1898 में निर्मित हुआ था। यह 484.80 MCFT भराव क्षमता का बांध है। लेकिन वर्तमान में यहाँ ऊदबिलाव नहीं बचा है। पूर्वी राजस्थान में जयपुर जिले में जमवारामगढ़ एक विशाल जलाशय है। इसमें पहले ऊदबिलावों का आवास रहा है (Prakash, 1994)। दुखद पहलू यह है कि राजस्थान के बड़े जलाशयों में एक यह जलाशय सूखे का शिकार हो गया तथा वर्ष 2000 के बाद यहाँ का जलीय आवास पानी न आने से पूर्णतया बर्बाद हो चुका है तथा ऊदबिलाव भी यहाँ से समाप्त हो गये हैं।

8. **दक्षिणी–पूर्वी राजस्थान में वितरण, जहाँ से चम्बल नदी गुजरती है**– चम्बल नदी के बेसिन का फैलाव राजस्थान के चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बूंदी, करोली, सवाई माधोपुर, टोंक, झालावाड़, कोटा, बारां, प्रतापगढ़ एवं धौलपुर जिलों में है। उदयपुर एवं राजसमन्द जिलों का पानी भी बनास में होकर चम्बल तक पहुँचता है। चम्बल आवास में ऊदबिलावों की स्थिति की अच्छी जानकारी कुछ अध्ययनों से मिलती है (Hussain and Choudhury, 1997; Hussain, 1996)। चित्तौड़गढ़ से हाड़ौती क्षेत्र एवं धौलपुर तक चम्बल अब ऊदबिलाव का अच्छा आवास साबित हो रहा है। चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, करोली एवं धौलपुर जिलों में जगह–जगह चम्बल में ऊदबिलाव उपस्थित हैं। चम्बल नदी पर बने राणाप्रताप सागर, जवाहर सागर तथा मध्यप्रदेश क्षेत्र में नीमच जिले में बने गांधीसागर में जल से घिरे टापुओं, बैकवाटर व अन्य स्थानों पर ऊदबिलाव मौजूद हैं। सवाई माधोपुर में रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान में मलिक तालाब से निकलने वाले धुन्दरमल नाले में ऊदबिलाव नजर आये हैं। यह नाला आगे जाकर बनास नदी में मिल जाता है (डॉ0 धर्मेन्द्र खाण्डल, निजी वार्तालाप, 2022)। कभी ऊदबिलाव बनास नदी में टोंक सीमा तक थे परन्तु टोंक जिले बीसलपुर बांध बनने से अब पानी की कम उपलब्धता से वे बनास नदी में दिखाई नहीं देते। वर्षाकाल में चम्बल नदी से नदी संगम स्थल से कुछ आगे तक बनास के अपस्ट्रीम में पानी भर जाने से कुछ दूरी तक कभी–कभार ऊदबिलाव दिख जाते हैं। चित्तौडगढ़ जिले में ब्राह्मणी नदी में बेगू कस्बे के पास जुलाई 2022 कुछ ऊदबिलाव देख गये। यह नदी भी आगे जा कर भैंसरोड़गढ़ अभयारण्य के पास चंबल नदी में मिल जाती है।

बनास नदी में चाणक्य दह व अमलीदह में कभी–कभी ऊदबिलाव चम्बल से पहुँच जाते हैं। कभी चम्बल में संगम करने वाली बड़ी नदियों में कुछ दूरी तक ऊदबिलाव मिलते थे। वर्तमान में पार्वती एवं बनास नदी के अलावा अन्य नदियों में ऊदबिलावों के मिलने की सम्भावना कम है।

5. **निष्कर्ष**– राजस्थान के बड़े हिस्से में बड़ी नदियों व बड़े जलाशयों में ऊदबिलाव की 1955–65 तक जगह–जगह अच्छी संख्या विद्यमान थी। आवास गुणवत्ता भी अच्छी थी एवं मछलियों के रूप में पर्याप्त भोजन उपलब्ध था। परन्तु 1960–1972 के बीच एक ऐसा समय आया जब इन प्राणियों की खाल जूतियां बनाने में उपयोग होने लगी (डॉ0 रजा तहसीन, निजी वार्तालाप, 2016) एवं प्राणियों को अंधाधुंध मारा जाने लगा। मछली ठेकेदार भी इस प्रजाति को पसन्द नहीं करते तथा इसे मछलीनाशक जीव मानकर जाल में फंसने पर मारने व भगाने लगे। ठेकेदारों ने उनके प्रजनन स्थलों को भी नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। यह सिलसिला वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के आने तक चलता रहा लेकिन तब तक बहुत हानि हो चुकी थी। आवास बर्बादी व अनेक मानवीय गतिविधियों ने जगह–जगह इस प्रजाति का समूल नाश कर दिया दिया। बजरी खनन, प्रदूषण, पानी की कमी, आवास बर्बादी, मछली के ठेकों का बढ़ता चलन, टापुओं की बर्बादी, प्रजनन स्थलों पर व्यवधान, मगरमच्छों द्वारा शिकार, तट वनस्पतियों का विनाश, नदी तटों पर बढ़ती सिंचित खेती, तालाबों में सिंघाड़े की बढ़ती खेती आदि ऐसे कारण हैं जिसमें ये प्राणी दुर्दशा के शिकार हो गये। वर्तमान में राजस्थान में चम्बल नदी के राज्य में प्रवेश करने के स्थल से लेकर कोटा बैराज तक एवं केशोरायपाटन से धौलपुर तक का चम्बल नदी क्षेत्र एवं चम्बल नदी में अन्य नदियों के मिलने से बने संगम स्थलों के आस–पास 6 जिलों में इस प्रजाति की उपस्थिति दर्ज हो रही है (**सारिणी–2**) । इस आवास में पर्याप्त मात्रा में भोजन एवं प्रजनन स्थल उपलब्ध हैं। अतः इस प्रजाति को प्रभावी ढंग से इस क्षेत्र में संरक्षित करने की जरूरत है। राजस्थान के गैर–चम्बल आवासों में 14 जिलों से यह प्रजाति अधिकांश आवासों में या तो समाप्त हो चुकी है या तेजी से समाप्ति की ओर बढ़ रही है।

जाखम, बीसलपुर एवं माही बांधों में आवास गुणवत्ता स्थापित कर एवं पर्याप्त सुरक्षा उपलब्ध करवा कर यहाँ इस प्रजाति को पुनः आबाद करने के प्रयास भी किये जाने चाहिए। यदि प्रयोग सफल रहते हैं तो प्रजाति को इसके प्राकृतिक वितरण रेंज में अन्य उपयुक्त आवासों में भी पुनः आबाद करने के प्रयास किये जाने चाहिये ताकि प्रजाति को राजस्थान भूभाग से विलुप्त होने से बचाया जा सके। साथ ही पूरे राजस्थान में सघन सर्वे की आवश्यकता है एवं जहाँ भी इस प्रजाति का अस्तित्व विद्यमान है वहाँ प्राथमिकता से आवास सुरक्षा व सुधार कर प्रजाति को बचाने की आवश्यकता है। राजस्थान सरकार ने 1974 में चम्बल नदी के 280 किमी क्षेत्र को राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य घोषित किया है। यह अभयारण्य कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, करोली एवं धौलपुर जिलों में फैला है। इस अभयारण्य की घड़ियाल, मगर, डॉलफिन, ऊदबिलाव एवं कछुओं के संरक्षण में महती भूमिका है। राजस्थान सरकार ने अपने आदेश संख्या प.3(13) वन/2014, दिनांक फरवरी 17, 2016 के द्वारा ऊदबिलाव को कोटा जिले का शुभंकर (Mascot) भी घोषित किया है ताकि लोगों में इस प्रजाति को संरक्षित–संवर्धित करने हेतु जागरूक किया जा सके। राजस्थान में विभिन्न प्रजातियों के वर्तमान वितरण की स्थिति जानने हेतु अनेक अध्ययन हुए हैं (शर्मा 2014, 2016, 2020, 2021)। ऐसे अध्ययन अन्य प्रजातियों हेतु भी किये जाने चाहिये ताकि उनकी वर्तमान स्थिति का सही आकलन हो सके।

6. **आभार**– लेखक वन विभाग, राजस्थान का बहुत आभारी है। विभाग के सहयोग से ही यह अध्ययन सम्भव हुआ है। लेखक श्री वी0 डी0 शर्मा, (भा0व0से0), डॉ0 रजा तहसीन, डॉ0 धर्मेन्द्र खाण्डल, श्री एम0 एल0 मीना (भा0व0से0), श्री मुकेश सैनी (भा0व0से0), श्री जे0 एस0 नाथावत (भा0व0से0), श्री गुणवंत सिंह झाला, श्री यादवेन्द्र सिंह, प्रो0 अनिल छंगाणी, डॉ0 प्रताप सिंह, श्री अनिल यादव (रा0व0से0), श्री वीरेन्द्र सिंह बेडसा, श्री बहादुर सिंह राठौड़ (क्षे0व0अ0), श्री एल0पी0 शर्मा (रा0व0से0), श्री उदयराम जाट (रा0व0से0), श्री दिनेश भट्ट (रा0व0से0), श्री अनुराग भटनागर (रा0व0से0), श्री रविन्द्र सिंह तोमर (पूर्व मानद वन्यजीव प्रतिपालक), श्री सांवरमल जाट (वन रक्षक), श्री राजू सोनी, सुश्री प्रेमकुंवर शक्तावत (स0 वनपाल), श्री भेरूसिंह चुण्डावत (पूर्व मानद वन्यजीव प्रतिपालक), श्री भोलू अबरार खान (क्षे0व0 अ0), श्री पर्वत विंह (क्षे0व0अ0) का आभारी है, जिन्होंने सूचनाएं एवं अनुभव साझा कर अध्ययन को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया।

References

1. Alfred, J.R.B. and Agrawal, V.C. (1996) The Mammal Diversity of the Indian Desert, In, A.K. Ghosh, Q.H. Bagri and I. Prakash (eds.) Faunal Diversity in the Thar Desert Gaps in Research. Scientific Publishers, Jodhpur, pp. 335-348.
2. Johnsing, A.T. and Manjrekar, J. N. (2013) Mammals of South Asia, Vol. I, University Press (India) Pvt.Ltd.
3. Hussain, S.A. (1996) Group Size, Group Structure and Breeding in Smooth-coated Otter,*Lutraerspicillata* Geoffroy (Carnivora, Mustelidae) in National Chambal Sanctuary, India, Mammalia, vol. 60, no. 2, pp. 289-297.
4. Hussain, S.A. and B.C. Choudhury (1997) Distribution and Status of the Smooth-coated Otter, Lutra*perspicillata* in National Chambal Sanctuary, India., Biological Conservation, vol. 80, pp. 199-206.
5. Menon, V. (2014) Indian Mammals-A Field Guide : pp. 300-301, Hichette Book Publishing India Pvt. Ltd.
6. Prakash, I. (1994) Mammals of the Thar desert, Scientific Publishers, Jodhpur, pp. 1-114.
7. Prakash, I. (1975) The Ecology and ZooGeographjy of Mammals. In, R. Gupta & I. Prakash(eds.) Environmental analysis of the Thar Desert, pp. 448-480. English Book Depot, Dehradun. Uttarakhand
8. Prater, S.H. (1980) The book of India Mammals (Reprint),pp. 144-163, BNHS.
9. Saha, G.K. and Mazumdar, S. (2008) Threatened Mammals of India - Ecology and Management. pp. 1-162, Daya Publishing House, Delhi.
10. Sharma, S. K. (2007) Study of Biodiversity and Ethnobiology of Phulwari Wildlife Sanctuary, Udaipur (Rajasthan). Ph.D. Thesis, MLS University, Udaipur, pp. 1-660.
11. Sharma, S.K.; Kulshreshtha, S.and Rahmani, A. R. (2013) Faunal Heritage of Rajasthan, India. Appendix Table 3rd : Mammals, pp. 603-605. Springer New York, Heidelberg, Dordrecht, London.
12. Verma, A. (2008) Mammals of Rajasthan, In, A. Verma (ed.) Conserving Biodiversity of Rajasthan. pp. 244-253. Himanshu Publications, Udaipur and New Delhi.